पंडित जवाहरलाल नेहरू

भारतीय संविधान की निर्माता शक्ति

14 नवंबर 1889 को इलाहाबाद के आनंद भवन में जन्मे जवाहरलाल नेहरू महान व्यक्तित्व थे जिन्होंने भारत की आधुनिक पहचान को आकार दिया। प्रसिद्ध वकील मोतीलाल नेहरू और स्वरूप रानी के बेटे जवाहरलाल नेहरू ने प्रगतिशील आदर्शों के साथ-साथ भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को भी आत्मसात किया। 15 साल की उम्र में, नेहरू इंग्लैंड चले गए, जहाँ उन्होंने हैरो, ट्रिनिटी कॉलेज, कैम्ब्रिज और लंदन स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स में अध्ययन किया। इंग्लैंड में बिताए समय ने उनके बौद्धिक विकास को बढ़ावा दिया और उन्हें भारतीय राजनीतिक आंदोलनों से परिचित कराया, जिससे उनके आदर्शों पर अमिट छाप पड़ी।

1912 में भारत लौटकर नेहरू ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय में अपना कानूनी करियर शुरू किया। हालाँकि, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में उनकी भागीदारी जल्द ही अग्रणी बन गई। महात्मा गांधी के नेतृत्व से प्रभावित होकर उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। दमनकारी रौलट अधिनियम का विरोध करने से लेकर नमक सत्याग्रह और भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान कारावास सहने तक, नेहरू ने खुद को भारत की मुक्ति के लिए समर्पित कर दिया। ब्रुसेल्स कांग्रेस (1927) और मॉस्को की यात्राओं सहित उनकी अंतरराष्ट्रीय व्यस्तताओं ने भारत के लिए समाजवाद और आत्मनिर्भरता के उनके दृष्टिकोण को मजबूत किया।

नेहरू की राजनीतिक सूझबूझ 1929 में लाहौर कांग्रेस में चमकी, जहाँ उन्होंने पूर्ण स्वतंत्रता की वकालत की, जो स्वतंत्रता संग्राम में मील का पत्थर था। स्वतंत्रता के बाद, वे भारत के पहले प्रधानमंत्री बने, जिन्होंने 15 अगस्त 1947 को अपना प्रतिष्ठित "ट्रिस्ट विद डेस्टिनी" भाषण दिया। नेहरू ने राष्ट्र निर्माण के कठिन कार्य को कुशलतापूर्वक पूरा किया, जिसमें लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और वैज्ञानिक प्रगति पर बल दिया गया।

प्रगति के लिए योजना बनाने में दृढ़ विश्वास रखने वाले नेहरू ने योजना आयोग की स्थापना की और गरीबी एवं बेरोजगारी से निपटने के लिए पंचवर्षीय योजनाओं की शुरुआत की। उनके दूरदर्शी नेतृत्व ने नदी-घाटी परियोजनाओं और सामुदायिक विकास कार्यक्रमों को जन्म दिया, जिसने भारत के आर्थिक विकास की नींव रखी। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, उन्होंने गुटनिरपेक्ष आंदोलन और पंचशील के सिद्धांतों का समर्थन किया, वैश्विक शांति और सहयोग की वकालत की।

नेहरू का योगदान राजनीति से परे भी था। उनकी रचनाएँ, जैसे कि ग्लिम्प्सेस ऑफ़ वर्ल्ड हिस्ट्री और द डिस्कवरी ऑफ़ इंडिया, उनकी बौद्धिक गहराई को दर्शाती हैं। प्यार से 'चाचा नेहरू' कहे जाने वाले, वे बच्चों के लिए विशेष स्थान रखते थे, उनके कल्याण और शिक्षा के लिए समर्पित प्रयास करते थे।

जवाहरलाल नेहरू का निधन 27 मई 1964 को हुआ। वे अपने पीछे स्थायी विरासत छोड़ गए। दुनिया भर के नेताओं ने उन्हें श्रद्धांजलि दी, जिसमें राजनेता, दूरदर्शी और शांति एवं न्याय के पैरोकार के रूप में उनकी भूमिका को मान्यता दी गई। लोकतंत्र और प्रगति के प्रति नेहरू की प्रतिबद्धता भारत के भावी पथ का मार्गदर्शन करती है।

संविधान सभा में दिये गए नेहरू के भाषणों के अंश

संविधान के उद्देश्य पर

"इस संविधान सभा में हम विश्व मंच पर कार्य कर रहे हैं और विश्व की निगाहें हम पर हैं तथा हमारे पूरे अतीत की निगाहें हम पर हैं। हमारा अतीत इस बात का साक्षी है कि हम यहां क्या कर रहे हैं और यद्यपि भविष्य अभी अजन्मा है, फिर भी भविष्य भी किसी न किसी तरह हमारी ओर देख रहा है।"

"यह संविधान सभा भारत को स्वतंत्र संप्रभु गणराज्य घोषित करने तथा उसके भावी शासन के लिए संविधान तैयार करने के अपने दृढ़ एवं गंभीर संकल्प की घोषणा करती है।"

"हमें इस संविधान के निर्माण के लिए इस भावना से आगे बढ़ना होगा कि हमें इस पर विस्तार से विचार करना होगा, तथा सदैव उद्देश्य प्रस्ताव को ही मापदण्ड के रूप में प्रयोग करना होगा।"

"संविधान आखिरकार एक प्रकार का कानूनी निकाय है जो सरकारों के तौर-तरीकों और लोगों के जीवन को दिया गया है।"

"यदि कोई संविधान लोगों के जीवन, लक्ष्यों और आकांक्षाओं से अलग हो तो वह खोखला हो जाता है।"

"इसमें निश्चित लचीलापन होना चाहिए। यदि आप किसी चीज को कठोर और स्थायी बनाते हैं, तो आप राष्ट्र के विकास को रोक देते हैं।"

राष्ट्रीय भावना पर

"शब्द अकसर जादुई चीजें होती हैं, लेकिन कभी-कभी शब्दों का जादू भी मानव भावना और राष्ट्र के जुनून का जादू व्यक्त नहीं कर पाता है।"

"समय आ गया है जब हमें पार्टी से ऊपर उठकर राष्ट्र के बारे में सोचना होगा, कभी-कभी तो उस पूरे विश्व के बारे में भी सोचना होगा जिसका हमारा राष्ट्र बड़ा हिस्सा है।"

"इसमें जहां तक संभव हो सका, उस समय की भारतीय जनता की भावना को मूर्त रूप देने का प्रयास किया गया है।"

"स्वतंत्रता जिम्मेदारी लेकर आती है; बेशक जिम्मेदारी के बिना स्वतंत्रता जैसी कोई चीज नहीं होती।"

"मुख्य बात यह है कि यह बहुत महत्वपूर्ण तथ्य है कि भारत लम्बे समय तक प्रभुत्व में रहने के बाद स्वतंत्र, सम्प्रभु, लोकतांत्रिक देश के रूप में उभरा है।"

"भारत को जो स्वतंत्रता अनेक कारणों से मिली है, जैसे इतिहास, परंपरा, संसाधन, हमारी भौगोलिक स्थिति, हमारी महान क्षमता और ऐसी अन्य बातें, वह अनिवार्य रूप से भारत को विश्व मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करती हैं।"

"यह प्राचीन भूमि विश्व में अपना उचित और सम्मानित स्थान प्राप्त करे तथा विश्व शांति और मानव जाति के कल्याण को बढ़ावा देने में अपना पूर्ण और स्वेच्छा से योगदान दें।

"भारत को प्रभावित करने का एकमात्र तरीका मित्रता, सहयोग और सद्भावना है। किसी भी तरह का दबाव डालने का प्रयास, संरक्षण का थोड़ा सा भी संकेत, नापसंद किया जाता है और नापसंद किया जाएगा।"

"ऐसे ही क्षण में नया भारत जन्म ले रहा है - पुनर्जीवित, जीवंत, निर्भीक।"

"मैं समाजवाद के पक्ष में हूँ और मुझे आशा है कि भारत भी समाजवाद के पक्ष में खड़ा होगा और भारत समाजवादी राज्य के गठन की दिशा में आगे बढ़ेगा और मुझे विश्वास है कि पूरे विश्व को उसी दिशा में आगे बढ़ना होगा। समाजवाद का कौन सा रूप, यह आपके विचार के लिए एक और विषय है।"

"यह इतना महत्वपूर्ण नहीं है कि हम केवल जीवन जी रहे हैं, बल्कि यह महत्वपूर्ण है कि हम इस संक्षिप्त जीवन में क्या करते हैं; यह इतना महत्वपूर्ण नहीं है कि किसी राष्ट्र का अस्तित्व ही इतना महत्वपूर्ण है, बल्कि यह महत्वपूर्ण है कि वह राष्ट्र अपने अस्तित्व की विभिन्न अवधियों में क्या करता है।"

"भारत की सेवा का अर्थ है उन लाखों लोगों की सेवा करना जो पीड़ित हैं। इसका अर्थ है गरीबी, अज्ञानता, बीमारी और अवसर की असमानता का अंत करना।"

स्वतंत्रता और मानवता

"जब तक प्रत्येक इंसान स्वतंत्र नहीं होगा, तब तक इस देश या दुनिया में पूर्ण स्वतंत्रता नहीं होगी।"

"इस दुनिया में स्वतंत्रता अब भी बहुत दूर है और राष्ट्र, कमोबेश सभी राष्ट्र अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहे हैं।"

"हम उन सभी अप्रिय चीजों का सामना करेंगे जो वर्तमान में हमारे सामने हैं या भविष्य में आ सकती हैं, और हम पीछे नहीं हटेंगे, हम लड़खड़ाएंगे नहीं और हम हार नहीं मानेंगे।"

"भारत ने अपनी सांस्कृतिक परंपरा को आगे बढ़ाया, जो अपरिवर्तनशील नहीं थी, कठोर नहीं थी, बल्कि हमेशा अपने सार को बनाए रखती थी, हमेशा नए विकासों, नए प्रभावों के लिए खुद को ढालती थी।"

"संविधान ही हमें उस वास्तविक स्वतंत्रता की ओर ले जाएगा जिसके लिए हमने आवाज उठाई है, और वह वास्तविक स्वतंत्रता बदले में हमारे भूखे लोगों को भोजन, उनके लिए कपड़े, उनके लिए आवास और प्रगति के सभी प्रकार के अवसर लाएगी।"

"यदि भारत के कुछ हिस्सों में स्वतंत्रता होगी और अन्य हिस्सों में स्वतंत्रता का अभाव होगा तो इससे और अधिक समस्या उत्पन्न होगी।"

"स्वतंत्रता प्राप्त करने और विदेशी सरकार को हटाने का कार्य अब तक हमारे सामने था, और वह कार्य अब पूरा हो गया है। लेकिन विदेशी प्रभुत्व को उखाड़ फेंकना ही सब कुछ नहीं है, जब तक कि प्रत्येक भारतीय स्वतंत्रता की हवा में सांस नहीं लेता और उसके दुख दूर नहीं हो जाते और उसकी कठिन स्थिति में सुधार नहीं आ जाता, तब तक हमारा कार्य अधूरा रहेगा।"

"स्वतंत्रता और शक्ति जिम्मेदारी लेकर आती है। यह जिम्मेदारी इस सभा पर है, जो भारत के संप्रभु लोगों का प्रतिनिधित्व करने वाली संप्रभु संस्था है।"

एकता और समावेशिता पर

"भारत किसी एक पार्टी, समूह या जाति का नहीं है। यह किसी विशेष धर्म के अनुयायियों का नहीं है। यह सभी का, हर धर्म और पंथ का देश है।"

"हमारी स्वतंत्रता प्रत्येक भारतीय को समान रूप से प्राप्त होगी। सभी भारतीयों के समान अधिकार होंगे, और उनमें से प्रत्येक को उस स्वतंत्रता में समान रूप से हिस्सा लेना होगा।"

"हमें स्वतंत्र भारत का महान भवन बनाना है, जहां उसकी सभी संतानें निवास कर सकें।"

"एक बात जो हम सभी के लिए स्पष्ट होनी चाहिए, वह यह है कि भारत में ऐसा कोई समूह, कोई पार्टी, कोई धार्मिक समुदाय नहीं है जो तब तक समृद्ध नहीं हो सकता जब तक भारत समृद्ध नहीं होता।"

"स्वतंत्र भारत शक्तिशाली राष्ट्र की ऊर्जा का प्रस्फुटन देखेगा।"

वैश्विक परिप्रेक्ष्य और शांति पर

"आज सभी राष्ट्र और लोग एक दूसरे से इतने घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं कि उनमें से कोई भी यह कल्पना नहीं कर सकता कि वह अलग रह सकता है। शांति को अविभाज्य कहा गया है, स्वतंत्रता

को भी अविभाज्य कहा गया है, समृद्धि को भी अविभाज्य कहा गया है, और इस एक विश्व में आपदा को भी अविभाज्य कहा गया है।"

"हम शांति चाहते हैं। अगर हम किसी देश की मदद कर सकते हैं तो हम उससे लड़ना नहीं चाहते।"

"यदि हम मुक्त, स्वतन्त्र, लोकतांत्रिक गणराज्य बनना चाहते हैं, तो इसका अर्थ यह नहीं है कि हम स्वयं को अन्य देशों से अलग कर लें, बल्कि स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में शांति और स्वतंत्रता के लिए अन्य देशों के साथ पूर्ण सहयोग करें।"